संपादक के नाम पत्र

स्वर्णलता नरूला दिल्ली

स्पैन के मई-जून अंक में प्रकाशित ''सेहत के लिए अच्छे हैं पालतू जीव'' लेख पसंद आया। इस लेख से हमें यह पता लगा कि पशुओं से प्रेम करने पर हमारा मानसिक स्वास्थ्य बेहतर रहता है। इसी तरह ''मानव के सच्चे दोस्त'' लेख ने हमें यह जानकारी प्रदान की कि किस तरह एक पक्षी किसी उदास व्यक्ति के जीवन में खुशी ला सकता है। ''कैदियों से प्रशिक्षण पाते कुत्ते'' लेख भी अच्छा लगा। कुत्तों को प्रशिक्षित कर कैदी समाज सेवा में अपना योगदान करते हैं जिसका हमें स्वागत करना चाहिए।

ब्रजेन्द्र कुमार सिंह कोडरमा

एंड्रिया नील का आलेख ''सेहत के लिए अच्छे हैं पालतू जीव'' पसंद आया। मुझे पालतू पशुओं से सदा लगाव रहा है। इस भागदौड़ की ज़िंदगी में पालतू जीव ही मानव को निश्छल प्रेम और अपनापन दे सकते हैं। ''टिक्का मसाला से आगे'' में यह जानना दिलचस्प लगा कि भारतीय व्यंजनों की अमेरिका में भी धूम मची हुई है।

प्रिय बंधु मुजफ्फरपुर

स्पैन का शुक्रगुजार हूं जिसने मुझे अमेरिका के बारे में वह हर जानकारी प्रदान की जिससे मैं रूबरू होना चाहता था। मई-जून के अंक में आपने पालतू जीवों के बारे में ऐसी जानकारी दी है जिसके बारे में आज भी बहुत से लाग अनजान हैं। उम्मीद है कि आगामी अंकों में भी आप अमेरिका के बारे में हमारी जानकारी इसी तरह बढ़ाते रहेंगे।

अनुभा मिश्रा लखनऊ

स्पैन को पढ़कर ऐसा लगता है कि अमेरिका हमारे बगल में है। आपने ''मानव के सच्चे दोस्त'' लेख प्रकाशित कर एक अच्छा विषय उठाया है। ''लगन के बूते पाई मंज़िल'' में भारतीय अमेरिकी युगल की सफलता की दास्तां भी प्रेरणादायक लगी।

महेश कुमार जैन बड़ौत

स्पैन का मई-जून अंक यह दर्शाता है कि मानव पालतू जीवों से प्यार करता है। पालतू जीवों पर प्रकाशित लेखों के अलावा मुझे ''अगर नहीं है कार तो हाजिर है ज़िप कार,'' ''डिलन के प्यार में दीवाने'' और ''अमेरिका में शिक्षा के चर्चित मुद्दे'' लेख भी अच्छे लगे।

कमला देवी पटना

पालतू जीवों पर केंद्रित स्पैन का अंक अच्छा लगा। इससे मुझे बहुत सी ऐसी जानकारियां मिलीं जिनके बारे में मुझे मालूम नहीं था। खानपान स्तंभ के तहत प्रकाशित ''टिक्का मसाला से आगे'' लेख पसंद आया। अमेरिका में भारतीय रेस्तरांओं और भारतीय खाने के शौकीन लोगों की संख्या में बढ़ोतरी बताती है कि भारतीय भोजन ने अब अमेरिका में अपनी जड़ें जमा ली हैं। यह इस बात का भी द्योतक है कि किस तरह अमेरिका में हर संस्कृति अपना प्रभाव छोड़ती है।

सुधीर पाहवा लखनऊ

स्पैन का मई-जून अंक देखने का मौका मिला और इसमें नुसरत दुर्रानी पर आलेख पढ़कर खुशी हुई। मेरा उनसे संपर्क 30 साल पहले टूट गया था। मेरे शहर लखनऊ के होने के नाते मैं उनके परिवार और एक किशोर के रूप में उन्हें करीब से जानता रहा हूं। अपने खास गुणों और प्रतिबद्धता ने उन्हें संघर्षों से जूझने में मदद की। मेरे लंबे समय तक बीमार रहने के दौरान मेरे बिस्तर के पास समय बिताना, मेरा पसंदीदा अवधी खाना लाना और स्नेह तथा देखभाल वाले वे क्षण मैं भूला नहीं हूं। इस युवा के बारे में मेरी जानकारी ताज़ा करने के लिए मैं आपका आभारी हूं।

मोहन सिंह अमृतसर

वाशिंगटन, डी.सी. और नई दिल्ली के बीच करों को लेकर पहले रही समानता आश्चर्यजनक है लेकिन इस बारे में मुझ सहित बहुत से भारतीयों को जानकारी नहीं थी।